शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति

डॉ. मंशाराम बघेल
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
भगवान बिरसा मुण्डा शासकीय महाविद्यालय
पाटी, बड़वानी, मध्यप्रदेश

शोध संक्षेप

भारतीय ज्ञान परंपरा की शुरुआत वेदों से मानी जाती है। उपनिषदों और पुराणों में भी ज्ञान के विभिन्न पहलुओं का वर्णन मिलता है। भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्य में आस्था को पुनर्जीवित करना है हमारी प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा ने व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित किया है तथा शिक्षा का स्वरूप व्यावहारिकता को प्राप्त करने योग्य जीवन के लिए सहायक है। रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृति ग्रंथ दर्शन, धर्म ग्रंथ, काव्य नाटक, व्याकरण तथा ज्योतिष शास्त्र, संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध होकर उनकी महिमा को बढ़ाते हैं, जो भारतीय सभ्यता-संस्कृति की रक्षा करने में पूर्ण सिद्ध होते हैं। ऐसा कहा गया कि सुसंस्कृत जन्म से ही संस्कारवान समाज का निर्माण होता है।

आदिकाल से ही भारत देश अपने धर्म ग्रंथों, संस्कृति एवं बहु भाषी गुणों के लिए प्रसिद्ध रहा है। यह तीनों गुण केवल शब्द मात्र नहीं अपितु प्रत्येक भारतीय के लिए गौरव की बात है, जो उसे अपने देश की संस्कृति से विरासत में मिले हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप व्यावहारिक एवं दैनिक जीवन को सुचारू रूप से संचालित करने में सहायक रहा है। इसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 केवल भारत के गौरवशाली इतिहास को ही हमारी शिक्षा का अंग नहीं बना रही बल्कि भूतकाल में जन्मे सभी महान व्यक्तित्व जैसे आर्यभट्ट, बुद्ध, वाल्मीकि, चरक, रामानुजन, वराह मिहिर, गार्गी, स्वामी विवेकानंद जी, सावित्रीबाई फूले, रमाबाई रानाडे, रजिया सुल्तान, मदर टेरेसा, एनी बेसेंट आदि के विचारों एवं कार्यों को वर्तमान की नई शिक्षा नीति के अनुरूप सभी स्तरों में शामिल करने का प्रयास कर रहे हैं, जिससे एक स्वस्थ भारत एवं संस्कृति को पूर्ण विकसित किया जा सके। यह शिक्षा नीति ऐसी कल्पना करती है कि बालक अपने ज्ञान, व्यवहार, बौद्धिक कौशल, से स्थाईरूप से विकास कर समृद्ध जीवन यापन कर सके जो कि उसके जीवन को संपूर्ण ज्ञानवर्धक एवं वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध बना सके।

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही हमारा देश मानवीय मूल्य एवं विशिष्ट वैज्ञानिक परंपराओं का देश रहा है। 'अयं निज परोवेति गणना लघु चतेसाम्। उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम। उपनिषद के इस सिद्धांत के आधार पर भारत दुनिया को एक परिवार मानता है। वेदों, उपनिषदों स्मृतियों और यहां की जीवन शैली को जानने के लिए भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों के अनेक विभागों में शोध संस्थानों की स्थापना करने लगे हैं। भारत की परंपराओं को आज विश्व भी अपना रहा है। हमें और हमारी भावी पीड़ियों को यह भी भारत के प्राचीन मूल्यों को यथोचित महत्व देना होगा। इसके लिए आंतरिक ज्ञान, गुण, शक्ति एवं आदर्शों को ठीक रूप से पहचानना एवं सही दिशा प्रदान करना होगी। यह ज्ञान परंपरा अनादि काल से चली आ रही है। इस भूमि में देवता सुरासुर सभी जन्म लेने के लिए तरसते हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारतीय ज्ञान परंपरा विशाल समुद्र की तरह है जो निर्झरिणी की भांति कहीं मंद कहीं तीव्र रफ्तार से बहती हुई वर्तमान समय में हमारे समक्ष है जो वेदों, उपनिषदों से प्रवाहमान होकर हिंदी में उपलब्ध है। भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भारतीय ज्ञान परंपरा का ज्ञान होना परम आवश्यक है। इसके बिना हम बालक के सर्वांगीण विकास की कल्पना नहीं कर सकते हैं। बालक जिस वातावरण में निवास करता है उसे ही आत्मसात करता है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति के भाव अपने आप भारतीयों में परिलक्षित होते हैं। भारतीय मनुष्यों ने इस तत्व को सम्मुख रखकर जीवन के उद्देश्य को नई शिक्षा नीति का एक स्थिर आधार मानकर शिक्षा संबंधी अनेक प्रश्नों के उत्तर दिये है। पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए प्राचीन भारतीय चिंतकों ने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष मानव जीवन का परम उद्देश्य निर्धारित किया है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व को शारीरिक मानसिक बौद्धिक आध्यात्मिक तथा पारिवारिक दृष्टि से सुख वैभव संपन्न करना है। जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सके यह सब उसे धर्म के बारे में ही करना है। वैष्णव संप्रदाय में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य भारतीय संस्कृति की परंपरा में अनमोल धरोहर के रूप में रहे हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा विकसित होकर भक्ति काल में सर्वाधिक तीव्रता से अभिव्यक्त हुई है। भक्ति काल के लगभग सभी कवियों ने अपने-अपने काव्य में प्रस्तुत करते हुए अपनी वाणी को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया है। संत कवियों ने भगवान के लिए अपने प्रेम के माध्यम से ईश्वर की भक्ति की ओर अग्रसर होने का मार्ग प्रस्तुत किया है। भारतीय परंपरा में धर्म शब्द किसी मत विशेष व किसी प्रकार की पूजा पद्धति या संप्रदाय का वचन नहीं हैं। धर्म ऐसे नैतिक नियमों का नाम है जिस व्यक्ति का अपना कल्याण होता है तथा उसकी पूर्ण समाजीकरण हो सकता है। महाभारत के अनुसार धर्म का अर्थ है:-

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चौवावधार्यताम्
आत्मनः प्रतिकूलनि परेषां न समाचरेत्।

अर्थात दूसरों के प्रति ऐसा व्यवहार न करना, जो स्वयं अपने आप को रुचिकर न हो, वही धर्म है। धैर्य, सहिष्णुता, सत्य, प्रेम, संयम, अपरिग्रह आदि ऐसे सद्गुण हैं, जिनके धारण करने से व्यक्ति का समाज मे जीवन के साथ पूर्ण सामंजस्य स्थापित हो सकता है। शिक्षा का प्रथम उद्देश्य से सद्गुणों का सवंर्धन करना है, जिन पर व्यक्ति, परिवार तथा समाज का कल्याण व हित निर्भर है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में शिक्षा क्षेत्र के प्रत्येक स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल करने पर बल दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षा में आगमन शिक्षक एवं शिक्षार्थियों दोनों को न केवल अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित कराएगी अपितु वर्तमान में संतुलित व्यवहार एवं सामाजिक सत्ता का अवबोध करने की ओर अग्रसर करेगी। हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, जो प्राय मनसा, वाचा, कर्मणा पर आधारित थी। इसने सदैव बालक के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक, राजनीतिक, भावनात्मक आदि विकास पर ध्यान केंद्रित किया है तथा आत्मनिर्भरता सम्मान सत्यता नम्रता जैसे सनातन मूल्य के सर्जन पर बल दिया है जो यह दर्शाता है कि आदिकाल से ही भारतीय शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप व्यावहारिक रहा है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता है। पूर्व में सैद्धांतिक ज्ञान दिया जाता था और वर्षों तक वही पाठ्यक्रम अधिकतर संस्थानों में चलाये जा रहे थे। उससे शिक्षा में व्यावहारिकता का बहुत बड़ा अभाव दिखाई देता था। जब तक सीखने की पद्धति नहीं होगी तब तक छात्र भी कुछ विशेष नहीं कर पाएंगे। महात्मा गांधी ने हेड, हैंड एंड हार्ट की बात कही थी, अर्थात जिसको गीता में ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग कहा गया है। यानी हाथ से कार्य करें, बुद्धि से सीखें, इसमें भावना का समन्वय हो, तभी विवेकशील छात्रों का निर्माण हो सकता है। इसी बात को यूनेस्को की डेलर्स कमेटी ने कहा लर्निंग टू नो, लर्निंग टू डू, लर्निंग टू बी एवं लर्निंग टू लीव टूगेदर कहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा भारत ही नहीं परंतु पूरे विश्व के लिए उपयोगी हो सकती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का जीता जागता उदाहरण हमारे देश में बालक सुबह जागरण के बाद अपने बिस्तर से पृथ्वी पर पैर रखने से पूर्व मंत्र बोलता है :

'समुद्रवसने देवी पर्वतस्तनमंडले
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्वमे'

अर्थात् हे पृथ्वी माता ! मुझे मेरी दिनचर्या चलानी है, इस हेतु मैं आप पर पैर रखता हूं, मुझे क्षमा करना, यही व्यावहारिक भारतीय दृष्टि है। आज भी पक्षियों को सुबह दाना-पानी देना, माताओं का प्रथम रोटी गाय के लिए देना रात्रि में वृक्षों को नहीं छेड़ना, पंच महाभूत को ईश्वर का स्वरूप मानकर पूजा करना, आदि बातें देखने को मिलती हैं। यह सब मात्र परंपरा नहीं है, इसके पीछे तार्किकता एवं वैज्ञानिकता भी है। भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय संस्कृति का ही भाग है, और भारतीय संस्कृति के तत्व ज्ञान को एक शब्द में कहना है तो वह आध्यात्मिकता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है- "कोई भी कार्य निस्स्वार्थ भाव से करना ही आध्यात्मिकता है। जो जितना निस्वार्थ है, वह उतना ही आध्यात्मिक है। विश्व में भारत को ही आध्यात्मिक राष्ट्र कहा जाता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत के ज्ञान एवं विचारों से समृद्ध परंपरा के आलोक में निर्मित की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार स्तंभों में भारतीय ज्ञान परंपरा को भी एक केंद्रीय स्तंभ माना गया है, जहां शिक्षा की प्राथमिक इकाई से लेकर शिक्षा की अंतिम इकाई तक भारतीय ज्ञान को स्थापित करने का प्रयास किया गया है यह शिक्षा नीति ऐसी कल्पना करती है कि शिक्षार्थी अपने ज्ञान, व्यवहार, बौद्धिक कौशल से स्थाई विकास, समृद्ध जीवन यापन एवं वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध बन सके। तभी उसे एक वैश्विक नागरिक माना जा सकता है। इस कल्पना को वास्तविक रूप प्रदान करने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा। प्रथम विचार एवं मूल्यों को नवचरित ज्ञान के साथ एकीकृत करना होगा न कि एक अलग विषय के रूप में स्थापित करके ज्ञान प्रदान किया जाए, तभी बालक का विकास भारतीय ज्ञान के अनुरूप संभव है। यह एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था है जिसमें कोई भी शिक्षार्थी सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक एवं अन्य भेदभाव के कारण पीछे नहीं हटेगा, जिसके लिए सर्व शिक्षा अभियान को समग्र शिक्षा के रूप में परिभाषित करते हुए सभी बच्चों को प्राथमिक स्कूलों में शत-प्रतिशत नामांकन करने का लक्ष्य रखा गया, जो भारत को नई दिशा देने में सहायक होंगे।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इस शिक्षा नीति में सभी बच्चों की प्राथमिक स्तर की शिक्षा को अपनी स्वयं की मातृभाषा या स्थानीय भाषा में प्रदान करने की बात पुरजोर रूप से रखी गई है। इसके द्वारा बालक अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगा। सामाजिक विज्ञान में समाहित लक्ष्य एवं इतिहास, भूगोल, राजनीतिक, समाजशास्त्र आदि भारतीय ज्ञान परंपरा स्थापित कला एवं परंपरा आदि के बारे में सीखने का शुभ अवसर प्रदान करती है। इसी प्रकार भाषागत साहित्य एवं अन्य विषयों के पाठ्यक्रम में स्थानीय ज्ञान एवं भारतीय ज्ञान की उपलब्धता बालक को अपने देश के बारे में जानने में अत्यधिक मदद करेगी, जहां कहीं भी संभव हो सके कला, संगीत, भाषा, साहित्य, नाटक, कला आदि विषयों में इसे वैज्ञानिक रूप से स्थापित करने का प्रयास करना नितांत आवश्यक है। वर्तमान नई शिक्षा नीति में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर से बालक के सर्वांगीण विकास हेतु संगीत एवं खेलकूद तथा ग्रंथालय की शिक्षा भी प्रारंभ की गई है। भारतीय ज्ञान किसी सूचना या महत्वपूर्ण बिंदु के रूप में न प्रस्तुत करके किसी प्रकार की कहानी या विस्तार रूप में व्याख्यान विवरण दिया जाना चाहिए तभी बालकों के उसके प्रति रुचि में वृद्धि होगी।

आधुनिकता के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका

यह भारत की भूमि महान भूमियों में से एक है, इस भूमि की ज्ञान की परंपरा अविरल धारा ने संपूर्ण जगत को अमृत से सींचा है। भारतीय ज्ञान परंपरा पुरातन युग से बहुत समृद्ध रही है बीती कुछ शताब्दियों से इस भूमि को इस प्रकार महसूस कराया जा रहा है कि कभी यहां ज्ञान अंकुरित ही नहीं हुआ है। हजारों वर्षों की गुलामी में हमारी सैकड़ो पीढ़ियों ने पीड़ा को झेलते हुए इस ज्ञान को संजोए रखा है। परंतु समय के साथ इसकी उपादेयता क्षीण होती रही है। इसलिए समय है कि भारत के ज्ञान वृक्ष की छाया में पोषित हो रहे इस विश्व को बताने का कि भारत का गुरुत्व अभी भी कायम है। भारत का ज्ञान गंगा जल के समान है जो निर्मल और अविराम है। यह भारतीय ज्ञान प्रणाली के बारे में चिंता और चिंतन करने का समय है। इसकी उपादेयता हो जनमानस तक पहुंचाने के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता है, क्योंकि यह बात केवल कुछ पुरातन ज्ञान के बारे में नहीं है, यह बुद्धि अंतरिक्ष सुरक्षा और राष्ट्रीय गौरव के बारे में है, साथ ही है बात भी विस्मृत न हो कि भारतीय ज्ञान परंपरा सत्य का अनुमोदन करती है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा आज के परिदृश्य में भी लागू है जो तनाव प्रबंधन स्थिरता आदि जैसे मुद्दों से निपटने के लिए व्यावहारिक सुझाव देती है। यह ज्ञान का एक विशाल भंडार प्रदान करती है, जिसका उपयोग लोगों, समुदायों और मानवता को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा को ध्यान में रखते हुए शिक्षार्थियों को ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिए गए निर्देशों एवं कार्यों को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है, कि हमें पहले निर्देशों को एक खोजपूर्ण तरीके से ग्रहण करें, तत्पश्चात पाठ्यचर्या निर्माण, शिक्षक अभिकल्प एवं अधिगम संबंधी उपकरण आदि पर ध्यान केंद्रित करें। केवल तथ्य पूर्ण एवं वैज्ञानिकता के आधार पर ही हम भारतीय ज्ञान परंपरा के ज्ञान को सुचारू रूप से आगे बढ़ा

सकते हैं, तभी आगामी पीढ़ी इस भारतीय गौरव को आगे बढ़ाने का अनुभव कर सकेगी।

संदर्भ ग्रंथ

1. मनु स्मृति।

2. मिश्र, जयशंकर: प्राचीन भारत का इतिहास।

3. पाणिनि कालीन भारतवर्ष, मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन।

4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020: मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

5. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोक भारती प्रकाशन।

6. वैदिक साहित्य और संस्कृति।

7. भारतीय शिक्षा का स्वरूप, दीनानाथ बत्रा, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली

8. शिक्षा विकल्प एवं आयाम, अतुल कोठारी, प्रभात पेपरबैक्स नई दिल्ली